“हस्तिनापुर”

Mandip Kumar Chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Dept. Of A.I.H. & Archaeology

Patna University,Patna-800005

M.A. Semester-II

Paper/CC – (8) Concept and Technique of Archaeology,Pre and Proto History of Africa & Archaeology Sites

हस्तिनापुर उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले की मवाना तहसील में गंगा नदी के किनारे पर स्थित है। यह पुरास्थल उपरी गंगा घाटी के उत्खनित स्थलो मे विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस स्थल पर बी० बी० लाल द्वारा सन् 1950-52 ई० के बीच कराये गए उत्खनन से उपरी गंगा घाटी के सांस्कृतिक अनुक्रम पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। उत्खनन के फलस्वरूप यहाँ पर पाँच सांस्कृतिक काल प्रकाश मे आये है।

प्रथम काल:- इस सांस्कृति स्तर से मुख्य रूप से गैरिक मृदभाण्ड (ochre coloured pottery) प्राप्त हुए है। यह हस्तिनापुर मे हुए उत्खनन का सबसे

निचला स्तर है। यहाँ से प्राप्त पात्र-खंड़ संख्या मे कम थे और जो भी उपलब्ध थे, वे भी टूटे-फूटे एवं अत्यंत भंगुर थे। इनके आकार प्रकार के विषय मे कोई विशेष जानकारी नही उपलब्ध है, अनुमान है कि इस तरह के पात्र ठीक ढ़ंग से पके हुए नही थे। हस्तिनापुर मे गैरिक मृदभाण्ड से संबंधित क्षेत्र बहुत ही सीमित थे।

द्वितीय काल:- हस्तिनापुर की दुसरी संस्कृति का प्रतिनिधित्व चित्रित-धुसर पात्र परम्परा (Painted Grey Ware) करती है। इस पात्र परम्परा से संबंधित द्वितीय काल का निक्षेप लगभग 2.10 मीटर मोटा मिला है। जिससे अनुमान लगता है कि इस संस्कृति के लोग हस्तिनापुर में काफी लम्बे समय तक रहे। इस पात्र परम्परा के पात्र-खंड भली-भाँति तैयार की गयी मिट्टी से चाक को तेज गति से चलाकर बनाये गए थे तथा इन्हे ऊँचे तापक्रम मे पकाया गया था। पात्र-प्रकारो में थाली और कटोरे मिलते है। सामानान्तर रेखाएँ, लहरिया, स्वास्तिक, संकेन्द्रिक वृत एवं बिन्दु समूह आदि प्रमुख अलंकरण अभिप्राय है। इस पात्र-परम्परा के साथ-साथ इस काल के स्तरो से कृष्ण-लोहित परम्परा, कृष्ण लेपित परम्परा, सामान्य लाल पात्र-परम्परा के बर्तन भी मिले है। ताँबे के उपकरण तथा बैल एवं घोड़े की मृण्मुर्तियाँ भी मिली है।

हस्तिनापुर के उत्खनन से जानवरो की हड्डियाँ मिली है जो मवेशियों, भेड़-बकरी, घोडे एवं हिरण की है। धान की खेती के साक्ष्य से ऐसा प्रतीत होता है कि चावल इनका प्रमुख खाद्यान्न था।

तृतीय काल:- हस्तिनापुर की तीसरी संस्कृति का संबंध उतरी काली चमकीली मृदभांड परम्परा से है। यहाँ पर द्वितीय काल के बीच समय का एक लम्बा अन्तराल दिखलायी देता है। इस काल के स्तरो का कुल निक्षेप लगभग 2.70 मीटर मोटा मिलता है। उत्तरी काली चमकीली पात्र-परम्परा के अतिरिक्त कृष्ण लोहित एवं कृष्ण लोपित मृदभाण्ड़ तथा अलंकृत धूसर मृदभाण्ड़ तृतीय काल मे प्रचलित थे। इस काल के स्तरो से पकी ईटे, सिक्के (आहत एवं लेख रहित ढ़ले हुए), मानव एवं पशु मृण्मूर्तियों आदि के साक्ष्य उपलब्ध हुए है। सकाई के विशेष संदर्भ मे विशेषकर व्यक्तिगत भवनों मे मृत्तिका वलय कूप (Terracotta Ring Well) और सोख्ता घड़ो (Soakage Jars) के उपयोग के साक्ष्य मिले है। तृतीय काल मे लोहे के औजारो का भरपुर प्रयोग होने लगा था।

चतुर्थ काल:- हस्तिनापुर का चौथा सांस्कृतिक काल शुंग-कुषाण कालीन है। इस काल के अवशेषो के साथ पुर्ववर्ती मृदभाण्ड नही मिलते है। चतुर्थ काल मे लाल मृदभाण्डो का निर्माण होने लगा था। इसके साथ ही साथ काले मृदभाण्ड़ भी

प्रचलन मे थे। इन मृदभाण्डो पर ठप्पे लगाकर त्रिरत्न, स्वास्तिक आदि अलंकरण बनाये गए थे। प्रमुख पात्र-प्रकारो में कटोरे, टोंटीदार तसले सुराही(Sprinkler), कलश इत्यादि थे। शुंग काल की अत्यन्त कलात्मक मृण्मुर्तियो मे से बहुत सी साँचे (Mould) मे ढ़ालकर बनायी गई थी। इस काल के निचले स्तरो से यौधेयो के सिक्के एवं उपरी स्तरो से कुषाण काल के शासक वासुदेव के सिक्को की अनुकृतियां प्राप्त हुई है। इस काल के अधिकांश भवन पकी ईटो से निर्मित थे।

<u>पंचम काल (पूर्व मध्य काल)</u>:- चतुर्थ काल के एक लम्बे अन्तराल के बाद हस्तिनापुर एक बार पुन: आबाद हुआ। इस काल के पुरावशेषो मे पुर्व मध्य काल के हल्के लाल रंग के एवं काँचित मृदभाण्ड (Glazed Ware) लखौरी इंटें तथा दिल्ली सल्तनत के शासक बलवन (1266-1287) ई० का चाँदी का एक सिक्का प्राप्त हुआ है। पार्वती की एक प्रस्तर प्रतिमा का भी उल्लेख किया जा सकता है।

हस्तिनापुर के प्रथम सांस्कृति काल के प्रारंभ की तिथि 1200 ई०पू० से पहले की तथा अंतिम सांस्कृति काल की तिथि पूर्व मध्य कालीन शासक बलवन (1206-1287) ई० कालीन है।